

6108124

(मन्वत्पुत्रोऽपि) अक्षयं त्वं प्रकृतिसुखित्तुः।  
 अक्षयं प्रकृतं । प्रकृतिसुखित्तुः ६१२-६१२ अक्षयं  
 अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं  
 (अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं)  
 अक्षयं अक्षयं अक्षयं । अक्षयं अक्षयं  
 अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं  
 अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं  
 अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं  
 अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं  
 अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं अक्षयं



जयपुर  
 टिप

